भक्तिभाव से भगवत्स्मरण करता है, वह निःसन्देह श्रीभगवान् को प्राप्त हो जाता है।।१०।।

तात्पर्य

इस श्लोक में निश्चित कथन है कि अन्तकाल में मन को भक्तिभाव से श्रीभगवान् में एकाग्र कर देना चाहिए। उत्तम योगियों के लिए प्राण को ऊर्ध्वारोहण के द्वारा भृकुटी के मध्य-देश में स्थापित करने का विधान है। इस प्रकार का योगाभ्यास न करने वाले शुद्ध-भक्त का चित्त सदा कृष्णभावनाभावित रहे, जिससे अन्तकाल में भगवत्कृपा से श्रीभगवान् की स्मृति अवश्य हो जाय। चौदहवें श्लोक में इसका विशद वर्णन है।

योबलेन पद विशेष है, क्योंकि योगाभ्यास के बिना अन्तकाल में इस भाव की प्राप्ति नहीं हो सकती। किसी योगपद्धति, विशेष रूप से भक्तियोग का अभ्यास किए बिना मरणकाल में सहसा भगवत्स्मरण नहीं हुआ करता। मरणासन्न मनुष्य का चित्त अत्यन्त विक्षुब्ध हो जाता है। इसलिए योग के द्वारा भगवत्स्मरण का आजीवन अभ्यास करना चाहिए।

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये।।११।।

यत्=जिस ब्रह्म को; **अक्षरम्**=अविनाशी ओंकार; **वेदविदः**=वेदों को जानने वाले विद्वान्; **वदन्ति**=कहते हैं; **विशन्ति**=प्रवेश करते हैं; **यत्**=जिसमें; **यतयः**=महर्षि; **वीतरागाः**=आसक्तिरहित; **यत्**=जिसकी; **इच्छन्तः**=इच्छावाले; **ब्रह्मचर्यम्**=ब्रह्मचारी-व्रत का; **चरन्ति**=अभ्यास करते हैं; **तत्**=उस; **ते**=तेरे लिए; **पदम्**=पद को; **संग्रहेण**=संक्षेप से; **प्रवक्ष्ये**=(मैं) कहूँगा।

अनुवाद

ओंकार का उच्चारण करने वाले वेदवादी विद्वान और अनासक्त महर्षि जिस ब्रह्म में प्रवेश करते हैं, जिस संसिद्धि के लिए ब्रह्मचर्यव्रत का सेवन किया जाता है, तेरे लिए अब मैं उसी मुक्तिपथ का वर्णन करूँगा।।११।।

तात्पर्य

भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि यद्यपि ब्रह्म अद्वितीय है, परन्तु उसके नाना प्राकट्य एवं रूप हैं। निर्विशेषवादियों के लिए **ओम्** शब्द ब्रह्म से अभिन्न है। श्रीकृष्ण ने यहाँ उसी निर्विशेष ब्रह्म का वर्णन किया है, जिसमें सर्वत्यागी महर्षिज्न प्रवेश करते हैं।

वैदिक विद्या की परिपाटी के अनुसार, विद्यार्थियों को प्रारम्भ से ओम् के उच्चारण की शिक्षा दी जाती है। इस विधि से पूर्ण ब्रह्मचर्य का अनुशीलन करते हुए आचार्य के सान्निध्य में रहकर वे निर्विशेष ब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इस प्रकार उन्हें ब्रह्म के दो स्वरूपों का बोध हो जाता है। यह पद्धति शिष्य की पारमार्थिक